B.A. III Hindi Hons के छात्रों के लिए

काव्य के लक्षण

डॉ॰ सतीश चन्द्र पाठक
हिन्दी विभाग
एस॰ एस॰ कॉलेज, जहानाबाद

काव्य का अध्ययन, मनन सहृदयों को सदा से ही आकर्षित करता रहा है। कहते हैं - 'काव्यशास्त्र विनोदेन कालो गच्छति धीमताम्' कविता मन को रससिक्त कर देनेवाली विधा है। यही कारण है कि कवियों की मार्मिक पंक्तियाँ मन में रच-बस जाती हैं जिन्हें हम गुनगुनाए बिना नहीं रह पाते। यहाँ तक तो ठीक है किन्तु जैसे ही यह प्रश्न पूछा जाता है कि काव्य क्या है इसका सही लक्षण क्या है; तो काव्य के अध्ययन-मनन का सारा आनन्द तिरोहित हो जाता है। काव्य-रचना एक बात है और लक्षणों की पहचान एवं व्याख्या सर्वथा दूसरी और अलग बात है। काव्य की रचना करना कविकर्म है तथा लक्षणों इत्यादि की पहचान एवं व्याख्या - आचार्यकर्म है। एक में हृदयगत भावनाओं की प्रधानता है तो दूसरे में मानसिक व्यापार की।

भारत में प्राचीन काल से ही जीवन के विविध विषयों पर अनवरत चिन्तन मनन होता आया है। सर्वप्रथम आचार्य भरत, जो नाट्यशास्त्र के आदि आचार्य माने जाते हैं, ने अपने ग्रंथ में काव्य, विशेषतः नाट्यकाव्य की बड़ी प्रशंसा की है। उसमें जिन तत्वों की ओर उन्होंने संकेत किया है वे काव्य लक्षण भी हो सकते हैं। किन्तु उन्होंने इसकी प्रत्यक्ष चर्चा नहीं की है। उनके बाद के आचार्य भामह ने काव्य को परिभाषित कर कहा है - 'शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्।' तात्पर्य शब्द और अर्थ से युक्त रचना को काव्य कहते हैं। यद्यपि यह सत्य है कि काव्य में शब्द और अर्थ तो होते ही हैं किन्तु मात्र इसी से काव्य की रचना हो जाए यह संभव नहीं है। वस्तुतः इस लक्षण में अतिव्याप्ति दोष आ जाता है। शब्द और अर्थ से युक्त रचना को यदि काव्य कहा जाता तो

व्याकरण, दर्शन आदि विषय का ज्ञान भी विशेष से काव्यांग में भी काम नहीं है। वस्तु के आस्वादन में रस रूप की आवश्यकता से इसकी व्याख्या की है। इन्हें रस भाव अलंकार और गुणादि ने ही आवश्यक सर्वांगपूर्ण शब्द-अर्थ की मान्यता मानते हैं।

आचार्य दण्डी ने काव्य को अलंकारिक अर्थ को व्यक्त करने वाला पदावली माना है। आचार्य दण्डी काव्य के शरीर-रूप की रक्षा करते हैं किन्तु आलंकारिक अर्थ-संकेत को दूर प्रतीत होता है। इसी प्रकार से आचार्य कुन्तक ने काव्य के लक्षणों को स्पष्ट करते हुए लिखा है-

शब्दार्थौ सहितौ वक्रकविव्यापारशालिनि।
बन्धे व्यवस्थितौ काव्यं तद्विदाह्लादकारिणि॥

अर्थात आह्लादकारक, कवि व्यापार से युक्त सुन्दर रचना में व्यवस्थित शब्द एवं अर्थ को काव्य कहते हैं। वस्तुतः एक ही अर्थ के वाचक अनेक शब्द हो सकते हैं, अतः उनमें से ऐसे शब्दों का प्रयोग वांछनीय है [struck out] जिससे विवक्षित अर्थ को ठीक-ठीक प्रकट कर सके। साथ ही वह इतना रमणीय हो कि सहृदयों को आह्लादित कर सके। इसी प्रकार की शब्द योजना को काव्य कहा जाता है।

रसवादी आचार्य पंडित विश्वनाथ ने काव्य को यों परिभाषित किया है – 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्।' देखने में तो परिभाषा बड़ी छोटी है किन्तु इसकी व्यापकता कोई नहीं है। उन्होंने रस-रसात्मक वाक्य को काव्य कहते हैं। इसमें रस शब्द की व्याख्या को जोड़ दिया जाय तो यह लक्षण काव्य का एक नया आयाम देता है।

इसी प्रकार पंडितराज जगन्नाथ ने काव्य को परिभाषित करते हुए लिखा है-

रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्।

अर्थात् रमणीय अर्थ के प्रतिपादक शब्द को काव्य कहते हैं। इस परिभाषा का 'रमणीयार्थप्रतिपादक' शब्द व्याख्या को

Scanned with CamScanner